ग्राम स्वराज कोष

अनुक्रमणिका

प्रबंध समिति रजिस्टर	स्थान	तारीख	टाईप पृष्ठ नं०
(1) भारत की शासन व्यवस्था - जे० पी० का प्रबंध	वाराणसी	29-10-59	1
(2) जे० पी० के निबंध पर परिसंवाद	"	"	1-2
(3) " " "	"	10-5-60	23-5
(4) विकेंद्रित अर्थ व्यवस्था परिसंवाद	इंदौर	17-8-60	5
(5) वर्धा जिला विकास योजनापर विनोबाजी की राय।	गोलकगंज	6-3-61	6-7
(6) विकेंद्रित अर्थव्यवस्था — 7 मुद्दे गां० विद्या संस्थान के सहयोग से।	"	"	8-9
(7) ग्राम स्वराज संकल्प के नमुने	काशी	2-11-61	9
(8) प्रदेशवार ग्राम स्वराज कार्य की जानकारी	आपरी	30-5-64	10-12
(9) समग्र दृष्टि से कार्य करने के लिये संगठना का स्वरूप	"	"	12, 13
(10) कोष का विनियोग तथा बटवारा जयप्रकाश जी की अध्यक्षता में समिति	पूना	17-3-70	14-15
(11) ग्राम स्वराज कोष की जानकारी की कमेटी रिपोर्ट। स० सेवा संघ का दसवा हिस्सा दिया जाय।	साक्लीसेकर	29-7-70	16-17
(12) पहली किश्त रु० 62,56,285 विनोबाजी को समर्पित	सेवाग्राम	1-10-70	18
(13) ग्राम स्वराज कोष का विनियोग	"	"	19
(14) " " के वितरण का प्रतिशत तथा फूल की योजना	"	"	20
(15) कोष संग्रह में हुए खर्च की योजना सिद्धराजजी की रिपोर्ट	"	"	21

पृष्ठ नं० 2 पर

www.vinoba.in

(16) सघन क्षेत्रों का चुनाव	सेवाग्राम	10-10-70	22-23
(17) ग्राम स्वराजकोष 3-12-77 तक 74 लाख प्राप्त•एक करोड का लक्ष दाताओं को धन्यवाद ।	वाराणसी	21-1-71	24
(18) केंद्रीय पूल से सहायता की योजना	"	"	25
(19) कोष संग्रह समिति 30-6-71 को तय की गई ।	नासिक	5-5-71	26
(20) बिकानेर में 2 लाख जमा किया गया उसकी 10 प्रतिशत संघ को क्यों नहीं भेजा ?	नकोदर	14-5-72	26

= = = = =

ग्राम स्वराज्य का चित्र तथा ग्राम स्वराज्य कोष

(प्रबंध समिति रजिष्ट्रेशन)

....

(प्रबंध समिति रजि नं0 3)

(वाराणसी – 29-10-59) पृ0नं0 208

प्रस्ताव नं0 7 :- "जे. पी. का ~~प्रबंध~~ निबंध"
भारत की शासन – व्यवस्था

...

श्री जयप्रकाशनारायणजी ने भारतीय शासन व्यवस्था को नया रूप देने संबंधी एक निबंध लिखा है और उसे देश के कुछ एक विचारकों के पास भेजा है। लोकशाही के जिस स्वरूप को भूदान-ग्रामदान आंदोलन के साथ देश के सामने हम रखते हैं उसके संदर्भ में समाज और राज्य व्यवस्था क्या हो और आज की राजनीति को कैसे मोड़ा जाय इस पर कई बार चर्चायें हुई लेकिन व्यवस्थित योजना व विचार लिखा नहीं गया था। श्री जयप्रकाशनारायणजी का उसी दिशा में यह महत्व का प्रयत्न है। ~~इसके~~ इससे हमारे विचार व चिंतन के एक महत्व के अंग की पूर्ति हुई है। यह आवश्यक है कि श्री जयप्रकाशनारायणजी के निबंध पर देशभर के कार्यकर्ताओं व संघ सदस्यों व विचारकों आदि का ध्यान आकर्षित किया जाय। इस पर से चर्चा व विचार विनिमय हो। अतः तय हुआ कि इस निबंध को निजी उपयोग व वितरण के लिये हिंदी व अंग्रेजी में छपाया जाय और वितरित किया जाय। फिर श्री जय प्रकाश नारायणजी के विदेश से लौटने पर 1 जनवरी से 7 जनवरी '60 तक इस विषय पर चर्चा के लिये साधना केन्द्र की ओर से एक परिसंवाद आयोजित किया जाय जिसमें 20 से 25 तक विचारकों को आमंत्रित किया जाय। उस चर्चा के बाद इस संबंधी आगे का विचार किया जाय।

.....

प्रबंध समिति रजि 3
(5-1-60)

प्रस्ताव नं0 10 :- जे. पी. के ~~प्रबंध~~ निबंध पर परिसंवाद हो पृ0नं0 223

...

श्री जयप्रकाशनारायणजी के निबंध "भारतीय राज्य व्यवस्था की पुनर्रचना का एक सुझाव" पर साधना केन्द्र वाराणसी में ता. 1 जनवरी से 3 जनवरी

www.vinoba.in

तक तीन दिन एक परिसंवाद हुआ जिसमें सर्व श्री अेम आर मसानी (अेम. आर. मसानी) श्रीमन्नारायण, शंकरराव देव, दादाधर्माधिकारी, प्यारेलाल, गोपीनाथ धवन, लाला-फिरोजचन्द, ए. एस. असरानी, ~~[illegible]~~ भोगीलाल शाह वल्लभस्वामी, सिध्दराज ढढ्ढा, रा. कृ. पाटील, झवेरभाई, और पूर्णचन्द्र जैन ने भाग लिया था। श्री जयप्रकाश नारायणजी ने उक्त परिसंवाद की जानकारी कराकर कहा कि इस विषय पर और चर्चा की आवश्यकता है। सर्वोदय विचारवाले भी इस पर गहराई से चर्चा करके कुछ नतीजों पर पहुंचें तब उस पर अमल की कार्रवाई शुरू हो जिसमें मुख्यतः आगामी आम चुनाव 1962 के पहले ~~वोकर्स~~ वोटर्स कौंसिल बनाकर मतदाता शिक्षण का काम तथा आर्थिक दृष्टि से क्षेत्रीय संयोजन का काम शुरू किया जा सकता है।

तय हुआ कि आगामी सर्वोदय सम्मेलन के पहले ~~हो~~नेवाले सर्व सेवा संघ के अधिवेशन के समय एक दिन इसके विषय में भी चर्चा हो। उक्त निबंध निजी उपयोग के लिये ही छपा था। उसकी प्रतियां थोड़ी रह गई हैं। अतः वह पुनः प्रकाशित कराकर के विचारकों को भेजा जाय।

दिल्ली में संसद अधिवेशन के समय भी उक्त निबंध पर 4–5 दिन का परिसंवाद आयोजित किया जाय ताकि देश के विधान को का भी मत उस पर अभिव्यक्त हो। सभी राजनैतिक दलों के प्रमुख व्यक्तियों को भी निबंध की प्रतियों को भेज दी~~या~~ जाय।

....

www.vinoba.in

स॰ से॰ संघ
(रजिस्टर नं0 4)

(वाराणसी– 10-5-60)
पृ0नं0 45

प्रस्ताव नं0 6 :-

जे॰ पी॰ के निबंध पर संवाद

....

सर्व सेवा संघ के सेवाग्राम अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव और उसके संदर्भ में प्रबंध समिति के निश्चय के अनुसार श्री॰ जयप्रकाशनारायण के प्रबंध ''भारतीय राज्य व्यवस्था की पुनर्रचना'' पर ता॰ 8,9 और 10 मई, 1960 को सर्व सेवा संघ के संशोधन के बीच एक परिसंवाद साधना केन्द्र काशी में आयोजित किया गया था। इस परिसंवाद का मुख्य अभिप्राय उक्त प्रबंध पर संघ के कार्यकर्ताओं का अपना अभिमत दृष्टिकोण, संशोधन, सुझाव आदि की जानकारी करना था। लगभग 20 कार्यकर्ताओं ने उसमें भाग लिया। ता9 मई, 1960 को केंद्रीय विकास का सहकार मंत्री श्री॰ एस॰ के॰ डे, उनके सहायक श्री॰ मनकोडी, संचालक उ॰ प्र॰ पंचायत राज्य व विकास आयुक्त ने भी लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण संबंधी चर्चा की दृष्टि से परिसंवाद में भाग लिया।

प्रबंध में वर्णित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा एवं विचार विमर्श के बाद परिसंवाद में सम्मिलित कार्यकर्ताओं ने सामान्यतः प्रबंध में प्रकट किए गए लक्ष्य, विवेचन और कार्यक्रम संबंधी संक्षिप्त सुझावों पर सहमति जाहिर की। निम्नलिखित अभिप्राय परिसंवाद की ओर से प्रबंध समिति के समक्ष पेश किए गए।

(1) सर्व सेवा संघ गांधी विनोबा के जीवन-दर्शन, विचार व कार्यक्रम पर आधारित जिस प्रकार के सर्वोदय समाज की भावना, दृष्टि और कल्पना सर्व सेवा संघ रखता है, उसको श्री॰ जयप्रकाशनारायणजी के प्रबंध में अच्छी अभिव्यक्ति मिली है।

(2) प्रबंध के विभिन्न मुद्दों पर जो चर्चा हुई, उसकी रोशनी में श्री॰ जयप्रकाशनारायण प्रबंध को अंतिम रूप दें और वह पुस्तक रूप में प्रकट किया जाय।

(3) प्रबंध का एक संक्षिप्त संस्करण तैयार किया जाय जिसमें ऐतिहासिक और सैध्दांतिक विवेचन संबंधी अध्याय तथा अंश संक्षेपतः दिया जाय किन्तु विकेंद्रित अर्थ, राज्य व्यवस्था (जिसमें प्रशासन भी शामिल है) संबंधी रूप-रेखा व वैसे समाज की स्थापना संबंधी कार्यक्रमवाले अध्याय और अंश कुछ विस्तार से दिए जायें।

www.vinoba.in

परिसंवाद की राय रही कि प्रबंध समिति एक समिति का गठन करें जो प्रचार की दृष्टि से प्रबंध का संक्षिप्त संस्करण तैयार करने में श्री० जयप्रकाशजी नारायण की सहायता करे तथा दूसरी समिति बनाई जाय जो इस विषय आंदोलन व कार्यक्रम के संबंध में समय-समय पर आवश्यक कार्रवाई करें ।

~~परिसंवाद~~ परिसंवाद में एक दिन केन्द्रीय विकास व सहकार मंत्री श्री० एस० के० डे और उनके विभाग के कुछ अधिकारियों ने भाग लिया । श्री० डे ने लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण का जो प्रयोग देश में कुछ राज्यों में शुरू हुआ, तथा अन्य कुछ राज्यों में निकट भविष्य में जो प्रयोग व्यापक तरीके पर किया जाने वाला है उसकी जानकारी कराते हुए संघ से विशेषतः निम्नरूप में सहयोग की अपील की :—

1- प्रचार, प्रसार के माध्यम से इस कार्यक्रम के प्रति अनुकूल जनमत जागृत करना ।

2- इस योजना में काम करने वाले सरकारी व गैर-सरकारी कर्मचारियों के प्रशिक्षण में योग देना ।

3- इस योजना की भावना को व्यक्त व प्रेरित करनेवाले साहित्य का निर्माण ।

4- ग्रामदानी या ऐसे कुछ क्षेत्रों में इस योजना के आधार पर सघन कुछ कार्य हाथ में लेना ।

(1) श्री० जयप्रकाशनारायणजी के प्रबंध को अंतिम रूप देकर उसे एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कराया जाने और प्रबंध में जाहिर किए गए विचार व कार्यक्रम को व्यापक रूप से प्रचलित करने की दृष्टि से उसका एक संक्षिप्त संस्करण तयार करने के कार्यों के सिलसिले में आवश्यक परामर्श, सहयोग व सहायता देने के लिए निम्न लिखित समिति :—

(1) श्री० जयप्रकाश नारायण ।
(2) श्री० शंकरराव देव ।
(3) श्री० दादा धर्माधिकारी ।
(4) श्री० अण्णा साहब सहस्त्रबुद्धे ।
(5) श्री० सिद्धराज ढड्ढा ।
(6) श्री० पूर्णचन्द जैन ।
(7) श्री० नारायण देसाई ।

www.vinoba.in

(8) श्री एस. ए. जगनाथन्.
(9) श्री रा. कृ. पाटील.
(10) श्री राधाकृष्णन्, संयोजक.

(2) पैलवाल की ग्रामदान परिषद में सामुदायिक विकास और ग्रामदान आंदोलन के परस्पर सहयोग की आवश्यकता अनुभव की गई थी और उसके संदर्भ में सामुदायिक विकास मंत्रालय तथा संघ के कार्यकर्ताओं के बीच विचार विमर्श होकर पिछले वर्षों में अमुक कार्यक्रम चलता भी रहा है। लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण के नये प्रयोग में इससहयोग का स्वरूप क्या हो सकता है, तत्संबंधी विचार विमर्श करने और कार्यक्रम बनाकर उस संबंधी कार्रवाई करने के लिए निम्नलिखित समिति बनाई गई।

(1) श्री जयप्रकाश नारायण.
(2) श्री गोकुलभाई भट्ट.
(3) श्री अण्णा साहब सहस्त्रबुद्धे.
(4) श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी.
(5) श्री मनमोहन चौधरी.
(6) श्री पूर्णचन्द्र जैन.
(7) श्री अरुणाचलम्.
(8) श्री रा. कृ. पाटील, संयोजक.

......

(रजि नं0 4) (इंदौर- 17-8-60)
प्रबंध समिति पृ0नं0 63

प्रस्ताव नं0 24 :- विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था सेमिनार

बारहवें सर्वोदय सम्मेलन सेवाग्राम के अवसर पर हुई प्रबंध समिति के निश्चय के अनुसार ता0 19 जुलाई से 23 जुलाई, 60 तक साधना केन्द्र काशी में विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था के विषय पर एक सप्ताह का परिसंवाद आयोजित किया गया था जिसकी जानकारी श्री रा. कृ. पाटील ने कराई। परिसंवाद की सिफारिशों पर विचार होकर तय हुआ कि अभी परिसंवाद की पूरी कार्यवाही साइक्लोस्टाइल कर प्रबंध समिति के सदस्यों को परिपत्रित की जाय। बाद में उस पर विचार किया जाय।

www.vinoba.in

(प्रबंध समिति रजि नं0 4)

पृ.
(गलिकगंज– 90)
6-3-6।

प्रस्ताव नं0 3 :- वर्धा जिला विकास योजना पर विनोबाजी की राय।

सेवाग्राम व उसके इर्दगिर्द के चालीसगावों में सर्वोदय दृष्टि से ग्राम निर्माण का कुछ ठोस कार्यक्रम चलाने के लिए कई बार बातचीत हुई तथा श्री अण्णासाहब सहस्त्रबुध्दे गत साल से इस विषय में विशेष प्रयत्नशील है। गांधीजी के कारण सेवाग्राम क्षेत्र की विशेषता को ध्यान में लेकर महाराष्ट्र राज्य सरकार भी ऐसी किसी योजना में पूरी सहायता देने के लिए उत्सुक है। कुछ ही दिनों पहले महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री श्री चव्हाण, श्री ढेबर भाई, श्री श्रीमन्नारायण, श्री जी रामचंद्रन्, श्री अण्णा साहब सहस्त्रबुध्दे आदि कुछ विशिष्ट व्यक्ति मिले थे और वर्धा क्षेत्र के कार्य के बारे में विचार-विमर्श किया था।

इस सिलसिले में वर्धा जिला अधिकारियों की ओर से प्राप्त वर्धा तहसील की कृषि उद्योग प्रधान समाज रचना संबंधी नोट श्री अण्णा साहब ने पेश किया। गत ता0 20 जनवरी को वर्धा में वहां के क्षेत्र के कार्य के बारेमें सभा हुई थी और उसमें श्री अण्णा साहब ने अपना लिखित नोट पेश किया था। वह भी उन्होंने सुनाया।

श्री विनोबाजी ने योजना के संबंध में चार बातें (मुद्दे) नजर में रखने के लिए कहा :-

(1) पूरा वर्धा जिला इस विकास योजना के अन्तर्गत किया जाय। छोटा क्षेत्र लेना हो तो जिले का जो सबसे गरीब और पिछड़ा हुआ भाग हो, उसके लिए योजना बने।

(2) योजना इस तरह से चले कि जिसे सार्वत्रिक रूप दिया जा सके। अर्थात अन्यत्र भी लागू की जा सकें।

(3) गांववाले स्वयं अपने साधनों का अंदाजा लगावे और अपने अभिक्रम से योजना बनावें। उसमें हम लोग मदद करें। योजना के लिए गांव-वालें कितना काम करेंगे, कितना पैसा खर्च करेंगे और सरकार से कितनी मदद चाहेंगे। उस सब की कुछ निश्चित रूपरेखा पहले बने, योजना अमल का जिम्मा गांववाले उठायें।

(4) योजना का उद्देश्य अन्त्योदय का रहे, अर्थात जो सबसे गरीब या पिछड़ा है, उसे ऊंचा उठाने का प्रयास उस योजना का साध्य हो।

www.vinoba.in

xxxxxxx

——————— यह जिम्मेवारी गांव वाले स्वयं उठावें ।

योजना, उसके उद्देश्य, क्षेत्र, साधन, उसे कार्यान्वित करने संबंधी रीतिनीति वगैरह के बारे में काफी चर्चा हुई । सब की राय रही कि योजना पूरे वर्धा जिले के लिए बनायी जाय । गत ता० 20 जनवरी को वर्धा की सभा के सामने श्री अण्णा साहब ने जो लिखित नोट पेश किया था वह योजना की बुनियाद रहे । श्री विनोबाजी के उपर्युक्त चार मुद्दे भी उसमें अन्तर्भूत रहें ।

वर्धा जिले की रीजनल प्लैनिंग के बेसिस पर और पूर्ण रोजगार देने के ख्याल से योजना बनायी जाय । योजना बनाने की जिम्मेवारी सर्व सेवा संघ की तरफ से श्री अण्णासाहब लें । योजना बनाने में सरकार की तरफ से पूरा सहयोग मिले । योजना तैयार हो जाती है और सरकार भी उसे मान्यता देती है तो उसको अमल में लाने का काम सरकार का रहे । सर्व सेवा संघ विचार प्रचार में सरकार की सहायता करें । मुख्यतः वायुमंडल पैदा करने और कार्य-कर्ता वर्ग की तालिम देने की जिम्मेवारी सेवाग्राम की तरफ से उठायी जाय । योजना का मसविदा श्री अण्णासाहब, श्री शंकरराव देव और श्री धीरेन्द्र भाई पक्का करें । प्रबंध समिति यह जिम्मेवारी इन तीनों को सौंपती है । प्रबंध समिति की इस चर्चा व निर्णय की जानकारी श्री अण्णा साहब संबंधित व्यक्तियों को दें और इस विषयक कार्यवाही से संघ के कार्यालय को समय-समय पर वाकिफ करते रहें ।

....

www.vinoba.in

समिति रजि नं० 4)

(गोलकगंज– 6-3-61)

पृ०नं० 107

प्रस्ताव नं० 24 :- विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था

...

जुलाई 1960 में विकेंद्रित अर्थ व्यवस्था के विषय पर जो सेमिनार हुआ था उसने सात मुद्दों पर गहराई से सोचने की सिफारिश संघ को की थी। वे सात मुद्दे निम्न प्रकार थे :—

(1) कृषि-उद्योग प्रधान समाज के लिए देहात में शिक्षण व्यवस्था।

(2) भिन्न भिन्न स्तरों पर योजना के भिन्न भिन्न अंगों में अनुसंधान।

(3) विकेंद्रित योजनाओं में अभी जो एजन्सीज काम करती है उनमें तथा समाज-विकास मिनिस्ट्री में अनुसंधान

(4) शहरी और देहाती क्षेत्रों के बीच की विषमता, उसपर पंचवर्षीय योजना के कारण पडनेवाला असर, और इस विषमता की खाई को कम करने के उपाय।

(5) किसी चुने हुए क्षेत्रों में बिजली का उपयोग करने पर अर्थ-व्यवस्था में क्या परिवर्तन होते हैं, उसके प्रयोग करने के लिए समिति।

(6) देहातों में छोटे उद्योगों को खडे करने से क्या प्रश्न उत्पन्न होते है और उनको हल करने के लिए क्या उपाय करने चाहिए इस संबंध में प्रत्यक्ष कार्य द्वारा संशोधन करने के लिए तंत्र-विशारदों की समिति।

(7) कृषि-उद्योग प्रधान समाज में उत्पादित वस्तुओं के आदान-प्रदान बिना शोषण के कैसे हो, यह बताने के लिए एक समिति।

ऊपर के सातों प्रश्नों पर विचार होकर तय हुआ कि ——

नं० 1 और 2 और 4 के विषय गांधी विद्या स्थान (इंस्टिटयूट ऑफ गांधीयन स्टडीज) के सुपूर्द किए जायं। विषयों के अध्ययन के संबंध में इंस्टिटयूट कार्रवाई करें।

www.vinoba.in

क   नं. 3 और 5 के संबंध में निर्माण समिति और खादी ग्रामोद्योग समिति सोचकर योजना बनाएं ।

क   नं. 6 के विषय में खादी ग्रामोद्योग समिति आगे की कार्रवाई करें ।

ङ   नं० 7 का विषय श्री. पाटील के साथ चर्चा कर के तय करना था । श्री. पाटील गोलकगंज की सभा में नहीं आ सके । इसलिए इसके संबंध में श्री. पाटील से बात करना तय रहा ।

चर्चा के दौरान में श्री. शंकरराव जी ने जानकारी दी कि ता. 23, 24 और 25 अप्रैल को पूना में गोखले इंस्टिट्यूट और सर्व सेवा संघ की गांधीयन इंस्टिट्यूट के तत्वावधान में एक परिसंवाद रखा गया है । उसमें "भारत की अर्थ - व्यवस्था के संयोजन के मार्ग" इस विषय पर चर्चा होगी ।

....

(प्र. समिति रजि. नं. 4)   (काशी- 2-11-61)

पृ०नं० 196.

प्रस्ताव नं० 23 :-   **ग्रामस्वराज्य संकल्प के नमूने.**

...

पांच लाख की आबादी के क्षेत्र में सघन-कार्य :-

श्री. कल्लूस्वामी ने अपने पत्र में लिखा है कि सर्व सेवा संघ पांच लाख की आबादी के किसी क्षेत्र को चुनकर ग्राम-संकल्प और ग्राम स्वराज्य की दिशा में प्रयोग करें यह बात पिछली बार साथियों से हुई थी उस संबंध में क्या हुआ यह श्री. विनोबाजी जानना चाहते हैं ।

इस संबंध में विचार होकर तय हुआ कि श्री. विनोबाजी की सघन क्षेत्र में प्रयोग के तौर पर काम करने की कल्पना सब प्रदेशों के पास भेजी जाय।

भारत के सब प्रांतों में श्री. विनोबाजी की पदयात्रा हो चुकी है । विनोबाजी का कहना है कि — (1) घर-घर सर्वोदय-पात्र, (2) कोई भी

झगडा अदालत में न जाय, (3) और ग्राम-स्वराज्य का संकल्प, यह हो जाय तो वह सर्वोदय जिला हुआ ऐसा वे मानेंगे। इस आधार पर जो भी प्रदेश या जिला उन्हें बुलायें वहां उनके जाने की तैयारी हो सकती है। तय हुआ कि श्री विनोबाजी की सर्वोदय जिले की कल्पना और उनका आवाहन सब प्रदेशों को विदित कराया जाय।

.....

(रजिस्टर नं0 5 प्रबंध समिति)

आपरी— 30-8-64) पृ0नं0 188

प्रस्ताव नं0 3 :- प्रदेशवार ग्राम स्वराज्य के त्रिविध कार्य की जानकारी

रायपुर के निर्णयानुसार त्रिविध कार्यक्रम की प्रगति.

रायपुर सम्मेलन के निर्णय के अनुसार 30 जनवरी से 12 फरवरी तक के पक्ष में त्रिविध कार्यक्रम की दिशा में क्या काम हुआ उसकी जानकारी सभी जिला सर्वोदय मण्डलों को पत्र लिखकर मांगी गई थी। कार्यालय में जो जानकारी प्राप्त हो सकी वह निम्न प्रकार :-

नाम प्रान्त	: कितने जिलों से रिपोर्ट	भूदान मिला एकड	ग्रामदान जिला संख्या	कितने गांवों में पदयात्रा	साहित्य विक्री.	पत्रिका के ग्राहक बनाए गए.
पंजाब	10	.	.	26	1407.57	6
मध्य प्रदेश	11	16.25		38	464.37	30
असम	1	.	9	13	.	10
प. बंगाल	2	231.92	3	.	29.66	13
गुजरात	2	.	.	27	193.85	82
मैसूर स्टेट	1	.	.	20	.	.
तामिलनाड	1	.	.	8	.	.
उत्तर प्रदेश	15	.	.	177	975.96	46

www.vinoba.in

राजस्थान	15	•	1	•	356.75	54
बिहार	10	0:48	24	•	30:00	29
	68	249:65	37	309	3458:16	270

= =

नाम प्रान्त	सूतांजलि प्राप्त गुण्डी	शांति केन्द्र बनाएं	शांति सैनिक बनाएं	किले बेचे •	सर्वोदय पात्र रखें •	सर्वोदय मित्र बनाएं •
पंजाब	8868	3	2	750	60	•
मध्यप्रदेश	3629	•	•	500	•	•
असम	4023	11	8	4650	56	34
प. बंगाल	294	•	45	•	•	•
गुजरात	111	•	•	•	•	•
मैसूर स्टेट	400	•	•	•	•	•
तामिलनाड	2000	•	•	•	•	•
उत्तर प्रदेश	23687	21	124	8800	139	68
राजस्थान	39902	4	66	2000	•	85
बिहार	9460	5	•	29900	•	30
	92364	44	245	36600	255	217

= =

रायपुर सम्मेलन में स्वीकृत त्रिविध कार्यक्रम की दिशा में अपने-अपने प्रदेशों में अब तक क्या काम हुआ उसकी जानकारी निम्न व्यक्तियों ने बैठक के सामने रखी :-

1) श्री ब्रह्मदेव बाजपेयी (उ. प्र.)
2) श्री बाबूलाल मित्तल (उड़ीसा)
3) श्री हरविलास बहन (गुजरात)
4) श्री बबलभाई (गुजरात)

www.vinoba.in

5) श्री जगन्नाथन् (आंध्र)
6) श्री चारुचंद्र भंडारी (प. बंगाल)
7) श्री प्रभाकर (आंध्र)
8) श्री पूर्णचन्द्र जैन (राजस्थान)
9) श्री दादाभाई (म. प्रदेश)
10) श्री रा. कृ. पाटील (महाराष्ट्र)
11) श्री ध्वजाप्रसाद साहू (बिहार)

....

समिति - रजि नं0 5 4) (छापरी- 30-3-64)

पृ0नं0 189

प्रस्ताव नं0 4 :- समग्र दृष्टि से कार्य करने के लिए संगठन का स्वरूप कैसा हो ?

...

भिन्न भिन्न प्रदेशों के अनुभवों का जो चित्र रखा गया उस पर से यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि ~~भिन्नभिन्न~~ भिन्न भिन्न रचनात्मक क्षेत्रों में कार्य करने वालों के बीच सौहार्द, समन्वय और समग्र दृष्टि बढने की दिशा में क्या किया जाय ।

इस विषय की चर्चा में श्री दादा धर्माधिकारी, श्री कपिलभाई श्री ध्वजाबाबू, श्री कृष्णदास गांधी, श्री ~~सोवनजेजी~~, सोवनीजी, श्री सिद्धराजी, श्री नारायणभाई, श्री राधाकृष्ण बजाज, श्री बाबूलाल मित्तल और श्री मनमोहन चौधरी ने हिस्सा लिया ।

त्रिविध कार्यक्रम को लेकर सारे देश में ग्राम-स्वराज्य को समग्र दृष्टि से सब कार्यकर्ता काम में लग जाय यह रायपुर सम्मेलन में तय किया गया। लेकिन इस दिशा में प्रगति क्यों नहीं होती है इसका विश्लेषण चर्चा में किया गया ।

एक विचार यह रखा गया कि खादी संस्थाओं को पिछले दस-बारह वर्षों में भूदान-मूलक बनाने की दिशा में सर्व सेवा संघ की तरफ से ठोस कदम नहीं उठाये जास कसे । खादी ग्रामोद्योग, ग्राम स्वराज्य समिति भी संस्थाओं का सक्रिय मार्गदर्शन नहीं कर पायी । इसी बीच खादी ग्रामोद्योग कमीशन बन जाने से आर्थिक व्यवहार, प्रमाण-पत्र, निरीक्षण आदि दैनंदिन सारा व्यवहार धीरे-धीरे सरकारी ढांचे पर चला गया । परिणाम यह हुआ कि खादी का

www.vinoba.in

बाहरी कलेवर तो बढ़ा । लेकिन निष्ठा, प्रामाणिकता, सेवाभाव, सादगी इत्यादि खादी-वृत्ति के निदर्शक गुणों में काफी शिथिलता आई ।

अहिंसा में न माननेवाले जिस ढंग से अपना संगठन या कारोबार ~~चलाते~~ चलाते हैं वैसा भी हम नहीं चला सकते और अहिंसक संगठन बनाने का तरीका भी खोज नहीं सकते । ऐसी हमारी त्रिशंकु जैसी दशा बन गई है ।

तीसरा विश्लेषण यह रखा गया कि समाज में एक संस्कार काम करता है उसके अनुसार अधिकांश लोग काम करते हैं । अपने हाथ में सत्र रहें गे तो अच्छा काम होगा इस तरह का पेटरनलिस्टिक (पैतृकवादी) विचार इसके पीछे काम करता है । सार्वजनिक पैसे के उपयोग के संबंध में सतर्कता कम दीखती है इसके लिए भी संस्कारों से बनी एक मनोवृत्ति है । इसलिए संस्कार बदलने का और नये मूल्य समाज में स्थिर करने का कार्यक्रम होना चाहिए ।

सारी चर्चा का रूख आत्मपरीक्षणात्मक रहा ।

....

www.vinoba.in

(प्रबंध समिति रजि. नं० 7)

(पूना — 17-3-70) पृ०नं० 70

प्रस्ताव नं० 7 :- कोष का विनियोग व बटवारे के नियम

...

संघ के अध्यक्षजी एस. जगन्नाथन् ने ग्राम-स्वराज्य कोष के सुझाव पर अपना नोट प्रस्तुत करते हुए कहा कि श्री विनोबाजी को 1970 के सितम्बर को 11 तारीख को पिचहत्तरवां वर्ष पूरा करेंगे। समूचे देश में उस दिन अमृत महोत्सव मनाना चाहिए। इस अवसर पर 100 जिलादान तथा एक करोड रुपये की राशि भी देश में "ग्राम-स्वराज्य निधी" के रूप में ग्रामदान- ग्राम - स्वराज्य के काम के लिए संग्रहित कर उनको भेंट की जाय। इस संदर्भ में उन्होंने आगे कहा कि बिहारदान हो चुका है, अन्य कुछ प्रदेश भी प्रदेशदान की ओर तीव्रता से आगे बढ रहे है। राज्यदान के बाद अब समय आग गया है कि तूफानी वेग से ग्रामसभाओं का गठन, भूमि वितरण, ग्राम कोष तथा शांति सेना आदि का आरंभ उन क्षेत्रों में व्यापक रूप में होना चाहिए। ग्राम स्वराज्य के इस आंदोलन को वेग से पूरा करने के लिए सैंकडों हजारों कार्यकर्ताओं को साहस्पूर्वक इसमें लगना होगा और उसके लिए अर्थ की आवश्यकता पडेगी।

इस संदर्भ में कुछ शंकाए उठाई गई। विनोबाजी ने तो निधी मुक्ति का विचार दिया है तो क्या उनके निमित्त संग्रह किया जाना उचीत होगा ? इस प्रकार धन संचय से आंदोलन में बुराइया भी पैदा हो सकती है। इस संबंध में यह स्पष्टता की गई कि विनोबाजी ने संचित निधी का उपयोग न करने के बारे में आपत्ति की थी चालू खर्च के लिए तो आज भी हम लोग हर स्तर पर धन संग्रह करते ही है, और वह करते रहना पडेगा अर्थ का उपयोग अनिवार्य तब तक उसे जुटाने की व्यवस्था भी करनी ही पडेगी।

11 सितम्बर 1970 को आचार्य विनोबाजी का 75 वां वर्ष पूरा होने के अवसर पर देशभर में हीरक महोत्सव आयोजित किया जाय। इस अवसर पर विनोबा को 100 जिलादान तथा ग्रामदान- ग्राम स्वराज्य के काम के लिए अेक करोड रुपये का कोष अेकत्र कर अर्पण किया जाय। यथासंभव भूदान दिवस आगामी 18 अप्रैल से कोष संग्रह का प्रारंभ किया जाय।

www.vinoba.in

यह कोष संचित निधि न बने । कोष के विनियोग के लिये कोई अलग ट्रस्ट न बनाया जाय । ग्रामदान-- ग्राम स्वराज्य के काम के लिए तीन साल में कोष की रकम का विनियोग हो जाय । कोष - संग्रह में सर्वोदय मित्र बनाने को एवं जन - साधारण से दान प्राप्त करने की प्राथमिकता दी जाय । कोष की कम-से-कम आधी रकम इस प्रकार से प्राप्त हो ऐसी कोशिश की जाय ।

श्री विनोबाजी की स्वीकृति से इस कोष का विनियोग ग्रामदान एवं ग्राम स्वराज्य के काम के लिए जैसे कि- ग्रामदान प्राप्त करने के सिलसिले में शिबिर प्रचार प्रकाशन, सभा सम्मेलन , यात्रा या सफर, कार्यकर्ता निर्वाह व्यय तथा कार्यालय संबंधी अन्य खर्च तथा ग्रामदान के बाद ग्राम सभाओं के निर्माण , ग्राम-- कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण आदि में होगा । कोष के कुल संग्रह का 10 प्रतिशत आंदोलन के केन्द्रिय खर्च के लिए सर्व सेवा संघ को दिया जायेगा । शेष 90 प्रतिशत सामान्यतोर पर संबंधित प्रान्तों, जिलों आदि में खर्च होगा । कोष का विनियोग सर्व सेवा संघ द्वारा मान्यता प्राप्त प्रदेशीय अथावा जिला सर्वोदय मण्डलो तथा आवश्यकतानुसार अधिकृत अन्य सूत्रों द्वारा होगा । ग्रामदान-- ग्रामस्वराज्य के इस चालू वर्ष में होनेवाला खर्च तथा कोष संग्रहह में होनेवाला खर्च इस कोष में से किया जा सकेगा ।

कोष की पूर्ति के लिए योजना बनाने तथा उसे कार्यान्वित करने हेतु श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में ऐक समिति बनायी जाय । सर्व श्री उ. न. ढेबर, श्री श्रीमन्नारायण, मन्निलाल इस समिति के उपाध्यक्ष तथा सर्व श्री सिध्दराज ढड्ढा , देवेन्द्रकुमार गुप्ता तथा राधाकृष्ण इस समिति के मंत्री होंगे । समिति में अन्य सदस्यों को लेने तथा आवश्यकतानुसार अन्य पदाधिकारियों को तनयुक्त करने का अधिकार समिति के अध्यक्ष को दिया गया ।

....

www.vinoba.in

(प्रबंध समिति रजि. नं0 7) पृ0नं0 97
(सावली-सीकर-29-7-70)

प्रस्ताव नं0 6 :- ग्राम स्वराज्य कोष समितिद्वारा नियम, उद्देश्य वितरण, ~~कोष~~ आदि की ~~सफाई~~ सफाई संघ की 10 प्रतिशत मिले। पूरी शक्ति संग्रह में सब लोग लगावें

ग्राम स्वराज कोष :- कोष समिति के मंत्री श्री. सिध्दराज ढढ्ढा ने कोष के काम का नोट तथा छपी हुई रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने इस संदर्भ में बताया कि दो प्रदेशों को छोडकर सब प्रदेशों में ग्राम-स्वराज कोष के लिए संगठन बन गए हैं। जिला तथा प्रखण्ड स्तरीय संगठन भी कई जिलों में बने हैं। प्रदेश संगठनों की ओर से अपीलें निकाली गई हैं। काम में गति व तीव्रता आई है। अब तक पांच लाख से कुल ऊपर संग्रह हुआ है। अब तक हुए खर्च की जानकारी भी उन्होंने करा दी। इसी सिलसिलें में उन्होंने लक्ष्य की पूर्ति योजना, संग्रह के विभाजन तथा विनियोग कोष के समर्पण किए जाने की योजना, निधि मुक्तिता के प्रस्ताव के संदर्भ में स्पष्टीकरण आदि पर प्रबंध समिति से मार्गदर्शन चाहा। इस संबंध में विस्तार से चर्चा हुई और प्रबंध समिति अपना निम्न मंतव्य प्रकट किया :—

''यह संतोष का विषय है कि सर्व सेवा संघ की प्रबंध समिति ने पूना की अपनी पिछली बैठक में पूज्य विनोबाजी की पहली जन्म जयन्ती के अवसर पर ग्राम स्वराज कोष संग्रह का जो निर्णय किया था, उसका आमतौर पर देश में स्वागत हुआ है और अधिकांश राज्यों में कोष संग्रह का काम प्रारंभ हो गया है। पूना के प्रस्ताव में यह स्पष्ट कर दिया गया था कि यह कोष संचित निधि के रूपमें नहीं रहेगा। यह कोष ग्रामदान आंदोलन के चालू-खर्च के लिए है और ऐसा अनुमान है कि सामान्य तौर पर अधिक तीन वर्ष के अंदर ग्रामदान प्राप्त करने, ग्रामसभाओं के गठन, ग्राम-कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण तथा शांति सेना और उसके विविध अंगों, जैसे ग्रामशांति सेना, तरुण सेना आदि अन्य कामों के लिए यह खर्च जएगा। ग्रामदान आंदोलन जनशक्ति को जागृत और संगठित करने का आंदोलन है इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि आर्थिक दृष्टि से भी वह संचित निधिपर निर्भर न रहे बल्कि जन आधारित हो।

www.vinoba.in

यह कोष जहां एक ओर संचित निधि न हो उसी तरह दूसरी ओर इसका उपयोग की अधिकाधिक विकेन्द्रित हो यह वांछनीय है । अतः इस कोष के विनियोग का अधिकार भी जिले या प्रदेश में ग्रामदान ग्रामस्वराज के काम में लगी हुई सर्व सेवा संघ कबारा मान्य संस्थाओं को होगा । जिन प्रदेशों या जिलों में अभी इस प्रकार के संगठन न हो वहां स्थानीय कार्यकर्ताओं की सलाह से सर्व सेवा संघ उचित व्यवस्था करेगा ।

यह भी तय किया जा चुका है कि मोटे तौर पर कुल संग्रह का 10 प्रतिशत अखिल भारतीय कार्य के लिए सर्व सेवा संघ को दिया जायगा और बंबई, कलकत्ता जैसे देशीय और बडे नगरों के संग्रह के बारे में जो विशेष व्यवस्था करना उचित हो, वह की जाय, शेष 90 प्रतिशत कोष संबंधित प्रदेश में ही ग्रामदान ग्रामस्वराज आंदोलन के लिए खर्च होगा । प्रबंध समिति की यह अपेक्षा और सिफारिश है कि जिस प्रकार केन्द्रीय खर्च के लिए भी कम से कम 10 प्रतिशत अंश निकाला जाय । शेष रकम का उपयोग जिलों और प्रखण्डों में किस प्रकार हो, यह प्रदेश सर्वोदय संगठन या ऊपर बताए अनुसार अन्य मान्य संगठन तय करें । ज्यों - ज्यों संग्रह होता जाय त्यों त्यों संग्रह का 10 प्रतिशत प्रदेशी कबारा ग्राम स्वराज कोष के केन्द्रीय कार्यालय को तुरंत भेजा जाना चाहिए ।

विनोबाजी के आगामी जन्म दिन 11 सितम्बर - 1970 को उनके और उनके काम के प्रति श्रध्दा तथा कृतज्ञता व्यक्त करने की दृष्टि से देशभर में अन्य कार्यक्रमों के साथ - साथ हर नागरिक उस दिन अपने अपने स्थान पर ग्राम - स्वराज्य कोष का संग्रह करें, ऐसी प्रार्थना है । 11 सितम्बर एक करोड के ग्राम स्वराज कोष के संकल्प की पूर्ति की अवधि है इसे ध्यान में रखते हुए जैसा कि पूज्य विनोबाजी ने भी अपेक्षा रखी है, एक बार देश भर में फैले हुए सर्वोदय कार्यकर्ता तथा इस आन्दोलन में सहानुभूति रखनेवाले अन्य सब मित्र अपनी पूरी शक्ति के साथ इस काम में जुटकर लक्ष्य को पूरा करेंगे, ऐसी आशा है । 11 सितम्बर- 1970 के बाद जल्दी से जल्दी सब प्रान्तों से संग्रह का हिसाब आदि एकत्र करके तारीख 2 अक्टूबर को पूज्य विनोबाजी को इस ग्राम स्वराज कोष समर्पण किया जा सके, ऐसी कोशिश होनी चाहिए ।

www.vinoba.in

समिति रजि नं0 7) (सेवाग्राम- 1-10-70)

पृ0नं0 108

प्रस्ताव नं0 3 :- विनोबाजी को पहली किश्त 62,56,285 रु0 समर्पण.

....

ग्राम स्वराज कोष के मंत्री श्री सिध्दराज ढड्ढाने अब तक के काम का विवरण प्रस्तुत किया । विभिन्न प्रदेशों के सर्वोदय मण्डलों के तथा ग्राम-स्वराज कोष संग्रह कार्य में लगे हुए अन्य कुछ एक साथियों ने उनके प्रदेशों में अब तक हुए कोष संग्रह, कोष की वर्तमान परिस्थिति, संग्रह की दृष्टि से आगे की संभावनाएं व इसमें आनेवाली कठिनाइयों की जानकारी दी । प्रबंध समिति की 1 अक्टुबर की रात्रिकालीन बैठक तक 54 लाख से कुछ ऊपर के संग्रह की सूचनाएं आ रही हैं । जिलों के कार्यकर्ता भी आने लगे हैं इसलिए कोष संग्रह की कुल प्राप्त राशि को अन्तिम रूप 2 अक्टुबर की सुबह तक दिया जाय और उसके अनुसार वह राशि श्री विनोबाजी को समर्पित की जाय । 2 अक्टुबर सुबह 9 बजे तक 62,56,285 रु0 ग्राम स्वराज कोष में प्राप्त होने की सूचना मिली और एक करोड के लक्ष्यांक की पहली किश्त के रूप में वह राशि पूज्य विनोबाजी को अमृत महोत्सव के अंतर्गतसमर्पित की गई ।

चर्चा में कई मित्रों ने बताया कि विभिन्न प्रदेशों में काम कुछ देरी से शुरू हुआ । संग्रह के लिए जो योजना की गई उसके फलस्वरूप अब कुछ परिणाम सामने आने लगे हैं । कुछ प्रदेशों तमिलनाडु, केरल आदि में चुनाव वगैरह की वजह से बडा व्यवधान हुआ और कुछ क्षेत्रों में वर्षा व बाढ के कारण भी कोष संग्रह में रुकावट आई । अतः यह सुझाव आया कि इस स्थिति में कोष संग्रह की अवधि बढाई जायं ।

प्रबंध समिति ने प्राप्त कठिनाइयों और सुझावों पर विचार करने के बाद कोष संग्रह की अवधि 31 दिसम्बर, 70 तक बढाने की सहमति दी । सबने गंभीरता से महसूस किया कि इस अवधि में लक्ष्यांक की पूर्ति के लिए हर संभव प्रयत्न किया जाना चाहिए । महाराष्ट्र, गुजरात और कर्नाटक के मित्रों ने जहां कि कोष संग्रह लक्ष्यांक के अनुसार पूरा किया है बताया कि वे भी इसमें बढेंगे ।

www.vinoba.in

राज्य ग्राम/कोष समिति के अध्यक्ष श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा कि मित्रों के आग्रह से उन्होंने कोष समिति की अध्यक्षता स्वीकार की थी। लेकिन मुशहरी प्रखण्ड के काम को ध्यान में रखते हुए उन्होंने यह तय किया था कि पहले से निश्चित किये गये कार्यक्रम के अलावा वे मुशहरी से बाहर नहीं जायेंगे इसलिए एक दो जगह के अलावा वे इस काम में समय नहीं दे सके। संयोग से श्री ढेबर भाई भी गंभीर रूप से अस्वस्थ्य हो जाने के कारण इस काम में योग नहीं दे सके। फिर भी आज जो कोष संग्रह हुआ है यदि काम कुछ जल्दी शुरु हुआ होता और उक्त कुछ व्यवधान नहीं आते तो जिस प्रकार से देश में ग्राम स्वराज्य कोष संग्रह का स्वागत हुआ, निश्चित ही लक्ष्यांक पूरा हो चुका होता। उन्होंने कहा कि एक करोड़ रुपयों में पहली किस्त के रूप में अब तक प्राप्त राशि श्री विनोबाजी को ~~सम्मलि~~ समर्पित की जाय। उन्होंने उन सभी मित्रों संस्थाओं और संगठनों के प्रति हृदय के आभार प्रदर्शित किया और धन्यवाद दिया जो बैठक में शामिल हुए हैं और जो अनुपस्थित हैं तथा जिन्होंने कोष संग्रह में अपना उदारपूर्वक योगदान दिया है।

....

पृ०नं० 110

प्रस्ताव नं० 4 :- ग्राम स्वराज्य कोष का विनियोग :-

श्री श्रीमन्नारायणजी ने सुझाया कि कोष संग्रह में जगह-जगह जिन मित्रों ने सहयोग किया है तथा जिनकी आन्दोलन के साथ सहानुभूति है, ऐसे नये मित्रों का सहयोग कोष के विनियोग में भी लेना चाहिए। इस सुझाव का सभी ने स्वागत किया, यह महसूस किया गया कि इससे आन्दोलन की शक्ति बढेगी। अतः यह मान्य हुआ कि प्रदेश की कोष समितियां ऐसे मित्रों के क नाम प्राप्त किये जायें जिनकी सर्वोदय के काम में रुचि है। तथा जो इस काम में सम्पर्क रखना और इसमें सहयोग देना पसंद करेंगे और प्रदेश तथा जिला सर्वोदय मंडलों ~~के~~ आदि से प्रार्थना की जाय कि वे ऐसे मित्रों को अपनी चर्चा ओं तथा बैठकों में सम्मलित किया करें।

चर्चा के दौरान यह बात भी सामने आई कि एक दो प्रदेशों में और कई जिलों में प्रदेश या जिला सर्वोदय संगठनों की स्थिति स्पष्ट नहीं है या तो वे सक्रिय नहीं है, तथा कहीं कुछ विवाद भी है। ऐसी परिस्थिति में कोष का विनियोग कौन करें इस बारे में शंका हो सकती है। पूना तथा सीकर के प्रस्तावों में यह स्पष्ट कर दिया गया था कि ऐसे मामलों में सर्व सेवा संघ निर्णय

निर्णय करेगा। प्रबंध समिति ने कोष के विनियोग से संबंधित ऐसे सब प्रश्नों के बारे में निर्णय करने का तथा श्रीमन्नारायणजी के सुझाव के अनुसार कोष संग्रह समितियों से सम्पर्क करके नये मित्रों का प्रवेश तथा जिला के सर्वोदय काम में सक्रिय सहयोग प्राप्त करने संबंधी कार्यवाही का अधिकार संघ के अध्यक्ष व मंत्री की उपसमिति को दिया।

...

पृ० नं० 110
(1-10-70)
(सेवाग्राम)

प्रस्ताव नं० 5 :- ग्राम स्वराज्य कोष का वितरण

..

कोष समिति के मंत्री श्री सिध्दराज ढड्ढा ने बताया कि बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली और मद्रास जैसे स्तर के शहरों से होनेवाले संग्रह का वितरण केन्द्र, प्रान्त और संबंधित शहर के काम के लिए किस अनुपात में हो, यह तय करना है। बम्बई के कई मित्रों ने सुझाया कि वहां संग्रहीत राशि का 25% संघ 25% बिहार तथा तमिलनाडु के काम के लिए 25% बम्बई शहर के काम के लिए तथा शेष 25 प्रतिशत प्रादेशिक सर्वोदय मण्डल को दिया जाय। प्रबंध समिति ने इस सुझाव को मान्य करते हुए यह तय किया कि शहर और प्रान्त के अंश के अलावा शेष 50 प्रतिशत संग्रह सर्व सेवा संघ को भेजा जाय। उसमें से आधे यानी कुल के 25 प्रतिशत का एक "पूल" किया जाय ~~उसमें से आधे यानी कुल के 25 प्रतिशत का~~ इसमें से किस प्रान्त में खर्च करना यह समय समय पर प्रबंध समिति तय करे। यह भी निर्णय रहा कि मद्रास कलकत्ता आदि शहरों के लिए भी सामान्य तौर पर यह फार्मूला लागू हो। दिल्ली शहर के परिस्थिति चूंकि और भी भिन्न है, क्यों कि उसके साथ प्रदेश या ग्रामीण क्षेत्र नहीं के बराबर है, अतः दिल्ली से संग्रह होनेवाले अनुपात के बारे में भी श्री देवेन्द्र कुमार गुप्त आदि मित्रों से सलाह करके तय किया जाय।

....

www.vinoba.in

(सेवाग्राम-1-10-70)

पृ०नं० 111

प्रस्ताव नं० 6 :- कोष संग्रह में हुए या होनेवाले खर्च की

— व्यवस्था —

यह भी तय हुआ कि केन्द्र प्रान्त जिला आदि में अंश का बंटवारा कुल संग्रह (ग्रोस कलेक्शन) के आधार पर ही यानी संग्रह में हुआ खर्च निकालकर नाहो। कोष संग्रह ने जिस स्तर पर जो खर्चा हुआ हो, वह संबंधित क्षेत्र अंश में उस उस स्तर का संगठन वहन करें। अर्थात केन्द्रीय कार्यालय में कूपन, प्रचार, कार्यालय आदि की व्यवस्था में जो खर्च हुआ है वह केन्द्रीय (सर्व सेवा संघ के) अंश में से लिया जाय और इसी प्रकार प्रान्तीय स्तर पर हुआ खर्च प्रान्तीय अंश में से और जिला स्तर पर का खर्च जिले के अंश में से।

श्री. सिध्दराज जी ने ग्राम स्वराज्य कोष के काम में जो अनुभव आये, उसके आधार पर अपनी रिपोर्ट में कुछ सुझाव पेश किये थे। उन पर बैठक में चर्चा हुई। प्रबंध समिति ने उन सुझावों पर विचार करके निम्न लिखित निर्णय लिये —

(1) ग्राम स्वराज्य कोष के सिलसिले में, खास तौर से शहरों और कसबों में, बौध्दिक वर्ग के तथा अन्य नागरिकों से सम्पर्क आया है, उसके साथ सर्व सेवा संघ का सम्पर्क आगे भी कायम रहना चाहिए। देश भर से ऐसे एक दो हजार मित्रों की सूची तैयार की जाय। इस सूची में संस्थाओं और संगठनों को भी शामिल किया जाय। इन सबको वर्ष में एक बार संघ के मंत्री के पत्र साथ संघ के काम की रिपोर्ट भेजी जाय।

(2) एक सर्व मान्य प्रश्न जो लोग पूछते हैं वह यह कि इतने ग्रामदान हुए हैं तो ग्रामदान के बाद गांवों में क्या हुआ परिवर्तन हुआ है? अभी आंदोलन का काम व्यापक रूप से संकल्प प्राप्त करने तक सीमित रहा है, फिर भी बहुत से गांवों में ग्रामदान के बाद उल्लेखनीय आर्थिक सामाजिक तथा नैतिक प्रगति हुई है। अब तो पुष्टि का काम कई क्षेत्रों में हाथ में लिया गया है। इस काम की जानकारी लोगों को बराबर मिलती रहे तो ग्रामदान आन्दोलन के काम में बहुतों की सक्रिय सहानुभूति मिलती रह सकती है और जानकारी के अभाव में गलतफहमी है, वह दूर हो सकती है।

www.vinoba.in

तय हुआ कि विभिन्न भाषाओं में जो हमारी पत्रिका में निकलती है उन पत्रिकाओं का विशेषांक हर तीन महीने में या वर्ष में चार बार, निकाले जायं और वे इन तथा अन्य स्थानीय मित्रों को कम से कम अगले तीन वर्ष तक निःशुल्क भेजे जायं। इन विशेषांकों में ग्रामदान की दृष्टि से जहां विशेष का काम हुआ हो उसका दिग्दर्शन हो। यह भी मत व्यक्त किया गया कि विभिन्न अखबारों के प्रतिनिधियों को क्षेत्रों के दौरे के लिए आमंत्रित किया जाय ताकि वे अपने अपने पत्रों में विशेष लोगों द्वारा ग्रामदान के काम की जानकारी प्रस्तुत कर सके। यह महसूस किया गया कि इस काम के लिए संघ में विचार प्रचार प्रकाशन का एक स्थानीय कक्ष रहे।

...

(सेवाग्राम - 1-10-70)

प्रस्ताव नं० 7 :- ग्रामदान प्राप्ति की घोषणा सघन क्षेत्रों में चुनाव।

...

ग्रामदान आन्दोलन की चर्चा के दौरान इस बात पर बल दिया गया कि अब समय आया जब एक ग्राम में वहां के परिवारों द्वारा घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करने मात्र से ही उसके ग्रामदान की घोषणा(घोषणा) नहीं की जानी चाहिये। ग्रामदान घोषणा के साथ उस ग्राम के भूमिहीनों को कुछ वास्तव में कुछ जमीन मिलनी चाहिये और सामुदायिक जीवन की शुरुआत होनी चाहिये। अभिप्राय यह कि लोगों को ग्रामदान घोषणा के बाद उसके विचार को और भावना को अनुमति हो।

काफी विचार विमर्श के बाद यह तय किया गया कि ग्रामसभा गठन की जाय और ग्रामदान घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर कर्ताओं को जितनी जमीन गांव में है उसमें से जितनी जमीन पांच प्रतिशत के हिसाब से एक हाथ से दूसरे हाथ में हस्तांतरित की जानेवाली हो, उस जमीन का खासा बड़ा भाग कम से कम 50 प्रतिशत का प्रत्यक्ष हस्तांतरण हो जाय और ग्राम सभा में ग्रामदान की घोषणा हो जाय एवं आदाताओं की जमीन पर कब्जा वास्तव में मिल जाय।

www.vinoba.in

इतना होने पर ही ग्रामदान की घोषणा की जाय ।

यह भी तय किया कि जहां जिलादान या प्रखण्डदान (प्रखण्डदान) हो गये हैं, वहां अविलम्ब पुष्टि का काम हाथ में ले लिया जाय। कम से कम देश भर में 100 प्रखण्ड चुने जायं और जो अनुभवी एवं पुराने साथी हों वे वहां बैठें तथा पुष्टि के काम में अपनी शक्ति लगायें । एक बार ग्राम सभाओं के गठन आदि के बाद प्रखण्ड सभा बनने तक का काम पूरा होने तक वे वहां बैठें ।

यह भी तय किया गया कि श्री जयप्रकाश नारायण के प्रयोग क्षेत्र मुशहरी कांड को अखिल भारतीय प्रोजेक्ट माना जाय । श्री जयप्रकाश-~~नारायण~~ नारायण की इच्छा के अनुसार देश के 6—8 वरिष्ठ साथी उनकी सहायता के लिए शीघ्र ही मुशहरी क्षेत्र में जायं । यह भी ध्यान रखा जाय कि आर्थिक अभाव के से वहां के काम में व्यवधान न आने पावे ।

.....

www.vinoba.in

९२०

(प्रबंध समिति रजि. नं0 7) (वाराणसी - 21-1-71)

(पृ0नं0 128)

प्रस्ताव नं0 14 :-

विनोबा को कोष समर्पण

दाताओं को धन्यवाद

.....

ग्राम स्वराज कोष समिति को विभिन्न प्रदेशों से जो जानकारी मिली है, उसके आधारपर तारीख 3 दिसम्बर 1970 तक ग्राम - स्वराज कोष में करीब 74 लाख रुपये प्राप्त हो चुके थे, 6 लाख रुपये से ऊपर पक्के वायदे मिल चुके थे और संग्रह के जो प्रयत्न उस समय तक चल रहे थे, उनके फलस्वरूप करीब 12 लाख रुपयों और प्राप्त हो जाने की सम्भावना है। इस प्रकार 31 दिसम्बर की जो अवधि निर्धारित की गई थी उस अवधि का कुल संग्रह 92 लाख रुपये तक पहुंच जायेगा, ऐसी आशा है। कोष समिति के उपाध्यक्ष श्री ढेबरभाई ने यह श्रद्धा व्यक्त की है कि करोड के लक्ष्य में जो कमी रहेगी, उसकी पूर्ति चुनाव के बाद करने का वे प्रयास करेंगे।

पू. विनोबाजी की 75 वीं जन्म जयंति के उपलक्ष्य में उनके तथा उनके काम के प्रति श्रद्धा के प्रतीक स्वरूप देशभर के अनेक छोटे बडे दाताओं की ओर से एकत्रित यह समस्त धनराशि सर्व सेवा संघ भक्ति पूर्वक तथा उनके दीर्घायुष्य की शुभ कामनाओं के साथ पू0 विनोबाजी को समर्पित करता है। देशभर में फैले- हुए जिन कार्यकर्ता भाई बहनों के सम्मिलित प्रयास से और दाताओं के सहयोग से कई प्रतिकूलताओं के बावजूद यह बडा काम सम्पन्न हुआ: उन सबके प्रति प्रबंध समिति तथा कोष समिति कृतज्ञता प्रकट करती है।

.....

पृ0नं0 129

प्रस्ताव नं0 15 :-

केन्द्रीय पूल से सहायता

..

पूर्व निर्णय के अनुसार बम्बई, कलकत्ता, मद्रास आदि जो शहरों से ग्राम स्वराज कोष में संग्रहीत धन - राशि का अंश केन्द्रीय पूल में

www.vinoba.in

आया है । मंत्री ने बताया कि बम्बई सर्वोदय मण्डल ने इच्छा व्यक्त की है कि बम्बई के संग्रहीत केन्द्रीय पूल के अंश से पुष्टि कार्य के लिए एक लाख रुपयों बिहार को भेजा जाय । इसी संदर्भ में मंत्री ने केरल सर्वोदय मण्डल तथा राजस्थान के बिकानेर जिला ग्राम स्वराज अभियान समिति की ओर से सहायता के लिए प्राप्त पत्र भी प्रस्तुत किये ।

— विचार विमर्श के बाद यह तय किया गया कि —

.....

(1) जहां प्रदेश दान हुआ है और पुष्टि के काम के लिए आवश्यकता है, लेकिन स्थानीय साधन भी उपलब्ध नहीं है, उनकी इस पूल से सहायता दी जाय । इस सिलसिले में यह तय किया गया कि बिहार एवं तमिलनाडु के पुष्टि कार्य के लिए एक एक लाख की सहायता इस पूल से दी जाय ।

(2) मद्रास शहर से हुए ग्राम स्वराज कोष संग्रह का केन्द्रीय पूल का अंश तमिलनाडु दान के पुष्टि कार्य के लिए दे दिया जाय ।

(3) केरल में जो संग्रह हुआ है, उसका 10 प्रतिशत वहां के काम की योजना व कार्यक्रम के अनुसार खर्च करने के संबंध में संघ के अध्यक्ष और मंत्री विचार कर निर्णय करें ।

(4) बाकी प्रदेशों के लिए वहां की परिस्थिति तथा आवश्यकता को देखकर समय समय पर प्रबंध समिति निर्णय करें ।

.....

www.vinoba.in

(नासिक— 5-5-71)

पृ०नं० 147

प्रबंध समिति रजि नं० 7

प्रस्ताव नं० 10 :- कोष संग्रह समाप्ति (30 जून 1971)

....

ग्राम स्वराज्य कोष को बंद करने की अंतिम तारीख प्रबंध समिति तय करे यह मांग कोष के मंत्री श्री सिध्दराज ढड्ढा ने रखी। 30 जून 1971 यह अंतिम तारीख मानी जाय ऐसा तय रहा। श्री टेंबर भाई का स्वास्थ्य ठीक न होने से उन्होंने दस लाख रुपया इकट्ठा करने की जो जिम्मेदारी ली थी उससे उन्हें मुक्त ही मानना चाहिये। यह जानकारी कोष के मंत्री ने दी। कोष के नाम से आयकर मुक्ति प्रमाण पत्र का नूतनीकरण किया जाय या नहीं इस पर चर्चा हुई। चर्चा के बाद तय हुआ कि ग्राम-स्वराज्य कोष के नाम का उपयोग करने या न करने के बारे में बाद में सोचा जाय। फिलहाल प्रमाण पत्र का नुतनीकरण कर लिया जाय।

.....

पृष्ठ नं० 169

(नकोदर — 14-5-72)

प्रस्ताव नं० 16 :- बीकानेर जिले का हिस्सा केन्द्र में नहीं आया स्थान में ही खर्च किया। संघ की आपत्ति

.....

बीकानेर जिले में ग्राम स्वराज्य का काम चलाने के लिये वहां की आदी संस्थाओं ने जो दो लाख रुपया दिया था, नियमानुसार उसका 10 प्रतिशत संघ को भेजा जाना चाहिये था। पर वह नहीं मिला। वह रकम वहीं के काम में उपयोग में लायी गयी। उसकी स्वीकृति देने की मांग करनेवाला बीकानेर जिला सर्वोदय मंडल का पत्र मंत्री ने पढ़कर सुनाया। चर्चा होकर तय रहा कि वह पैसा पहले संघ के पास भेज कर बाद में मांग की जानी चाहिये थी। प्रबंध समिति की यह राय बीकानेर जिला सर्वोदय मंडल को भेजी जाय और खर्च हुई रकम की मंजूरी दी जाय ऐसा निर्णय हुआ।

www.vinoba.in

.....